University of Technology

परिसर प्रतिध्वनि

(नवोन्मेष, युवा ऊर्जा एवं अन्तःक्रिया का अभिव्यक्ति मंच)

मासिक भित्ति पत्रिका, अंक - 17, मई 2026

प्रधान संरक्षक	-	श्रीमती मीनाक्षी सुराना
प्रमुख संरक्षक	-	डॉ. प्रेम सुराना
मुख्य संरक्षक	-	डॉ. अंशु सुराना
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)	-	प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
वरिष्ठ सलाहकार	-	प्रो. (डॉ.) अरविन्द कुमार अग्रवाल
प्रधान संपादक	-	प्रो. (डॉ.) अंकित गांधी
संपादक	-	डॉ. प्रेम कुमार
सह-संपादक	-	डॉ. मोनिका शर्मा
खेल संपादक	-	श्री यश यादव

प्रेसिडेंट(वाइस चांसलर) का संदेश ...

प्रिय विश्वविद्यालय परिवार,

हमारे विश्वविद्यालय की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के अंक 17, मई 2026 को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह अंक हमारे विश्वविद्यालय में निरंतर हो रही शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं शोधपरक गतिविधियों का जीवंत प्रतिबिंब है। मई माह का यह अंक विशेष रूप से हमारे विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों और विभिन्न विभागों के सामूहिक प्रयासों को दर्शाता है, जो ज्ञान, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व की दिशा में निरंतर अग्रसर हैं। विश्वविद्यालय में आयोजित सेमिनार, कार्यशालाएँ, शोध-परिचर्चाएँ तथा विविध सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ न केवल बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। 'परिसर प्रतिध्वनि' हमारे विचारों, अभिव्यक्तियों और सृजनात्मकता का सशक्त मंच है। यह पत्रिका विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के बीच संवाद और समन्वय को सुदृढ़ करती है तथा हमें एक साझा मंच प्रदान करती है, जहाँ हम अपने अनुभव, दृष्टिकोण और उपलब्धियों को एक-दूसरे के साथ साझा कर सकते हैं। यह प्रयास हमारे विश्वविद्यालय की अकादमिक संस्कृति को और अधिक समृद्ध बनाता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'परिसर प्रतिध्वनि' आने वाले समय में भी इसी प्रकार अपनी गुणवत्ता, नवीनता और उद्देश्यपूर्ण दृष्टिकोण के साथ विश्वविद्यालय की प्रगति का दर्पण बनी रहेगी। इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल, विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई और धन्यवाद। आपके समर्पण और सहयोग से ही यह प्रयास संभव हो पाया है। आप सभी के उज्ज्वल भविष्य, सतत सफलता और समृद्धि के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। आइए, हम सभी मिलकर अपने विश्वविद्यालय को उत्कृष्टता की नई ऊँचाइयों तक ले जाने का संकल्प लें।

प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

कुलसचिव महोदय की कलम से...

'परिसर प्रतिध्वनि' के मई 2026 अंक के प्रकाशन पर समस्त विश्वविद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह पत्रिका हमारे विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन की समृद्ध परंपराओं को संजोते हुए प्रत्येक माह नवीन ऊर्जा और प्रेरणा का संचार करती है। मई माह का यह अंक विश्वविद्यालय में आयोजित विविध शैक्षणिक कार्यक्रमों, शोध गतिविधियों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं रचनात्मक आयोजनों का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। इन सभी गतिविधियों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि हमारे विभाग निरंतर गुणवत्ता, नवाचार और उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर हैं। इस अंक में संकलित तथ्यपरक एवं सारगर्भित सामग्री हमारे संस्थान के सतत विकास और सामूहिक प्रयासों को प्रभावी रूप से प्रतिबिंबित करती है। 'परिसर प्रतिध्वनि' विश्वविद्यालय के प्रत्येक सदस्य विद्यार्थी, शिक्षक एवं कर्मचारी को अपनी अभिव्यक्ति, विचार और रचनात्मकता को साझा करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है। यह न केवल संवाद और समन्वय को सुदृढ़ बनाती है, बल्कि एक सकारात्मक और प्रेरणादायक शैक्षणिक वातावरण के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस पत्रिका की विशेषता यही है कि यह केवल घटनाओं का संकलन नहीं, बल्कि हमारे सामूहिक दृष्टिकोण, अनुभवों और उपलब्धियों का प्रतिबिंब है। इसके माध्यम से हम सभी को एक साझा मंच पर अपने विचारों का आदान-प्रदान करने और एक-दूसरे से सीखने का अवसर प्राप्त होता है, जो हमारे संस्थान की प्रगति में सहायक सिद्ध होता है। कुलसचिव के रूप में मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसी भी संस्थान की सफलता पारदर्शिता, सहभागिता और समन्वय पर आधारित होती है। 'परिसर प्रतिध्वनि' इन मूल्यों को सशक्त रूप से आगे बढ़ाते हुए विश्वविद्यालय समुदाय को निरंतर प्रेरित करती रहेगी। इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल, विभागाध्यक्षों, रचनाकारों एवं सभी सहयोगियों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद ...

डॉ. अनूप शर्मा
कुलसचिव
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

संपादकीय...

प्रिय पाठकों, सप्रेम नमस्कार,

मई का महीना अपने साथ नव ऊर्जा, उत्साह और सतत प्रगति का संदेश लेकर आता है। यह समय हमें अपने प्रयासों को नई दिशा देने और शैक्षणिक तथा रचनात्मक गतिविधियों में और अधिक सक्रिय होने के लिए प्रेरित करता है। यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' का सत्रहवाँ अंक (मई 2026) आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह अंक विश्वविद्यालय के विविध आयामों को समेटे हुए है, जिसमें विद्यार्थियों और संकाय सदस्यों की प्रतिभा, परिश्रम और समर्पण की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। मई माह शैक्षणिक गतिविधियों की निरंतरता और उपलब्धियों के विस्तार का प्रतीक है। इस अंक में संकलित रिपोर्ट्स, कार्यक्रमों का विवरण, कार्यशालाएँ, संगोष्ठियाँ एवं प्रतियोगिताएँ हमारे संस्थान की सक्रियता और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। 'परिसर प्रतिध्वनि' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि यह हमारे विश्वविद्यालय के जीवंत वातावरण का प्रतिबिंब है। यह मंच विद्यार्थियों को अपने विचार व्यक्त करने, रचनात्मकता को निखारने और नवीन दृष्टिकोण विकसित करने का अवसर प्रदान करता है, साथ ही, यह समाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक सरोकारों को एक सूत्र में पिरोते हुए हमें हमारे दायित्वों के प्रति सजग भी बनाता है।

इस अंक के माध्यम से हम न केवल अपने शैक्षणिक प्रयासों का अवलोकन करते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी समझते हैं। ज्ञान, नवाचार और संवेदनशीलता का यह संगम हमें निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। मैं इस अंक के सफल प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी विभागाध्यक्षों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, कर्मचारियों एवं रचनाकारों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आपके सहयोग और समर्पण से ही यह पत्रिका निरंतर प्रगति कर रही है। आइए, हम सभी मिलकर 'परिसर प्रतिध्वनि' को और अधिक समृद्ध, प्रेरणादायक और प्रभावशाली बनाने का संकल्प लें तथा अपने विश्वविद्यालय को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सक्रिय भूमिका निभाएँ। सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ...

डॉ. प्रेम कुमार
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

नोट:

आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अपने बहुमूल्य सुझाव और प्रतिक्रियाएँ अवश्य प्रेषित करें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक समृद्ध एवं उपयोगी बनाया जा सके।

विश्व पृथ्वी दिवस पर जागरूकता वीडियो कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 22 अप्रैल 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के स्कूल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंस के सहयोग से आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) द्वारा विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर एक जागरूकता वीडियो कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के मुख्य सेमिनार हॉल, ब्लॉक A में दोपहर 03:30 बजे आयोजित हुआ, जिसमें विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं नॉन टीचिंग स्टाफ की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही। कार्यक्रम का मुख्य विषय 'हमारे ग्रह में निवेश करें' (Invest in Our Planet) रहा, जिसके अंतर्गत प्रतिभागियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा सतत जीवनशैली को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न जागरूकता वीडियो प्रस्तुत किए गए। चयनित वीडियो का प्रदर्शन किया गया, जिसने सभी को पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने कहा कि- "यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को दर्शाता है। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए रचनात्मक वीडियो अत्यंत सराहनीय हैं।" प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने अपने संदेश में कहा कि- "विश्व पृथ्वी दिवस के इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के लिए मैं आईक्यूएसी एवं स्कूल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंस को बधाई देता हूँ। यह पहल विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।"

कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा ने बताया कि मैं इस सफल आयोजन के लिए आईक्यूएसी एवं सभी प्रतिभागियों को बधाई देता हूँ। ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों को सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति प्रेरित करते हैं। आईक्यूएसी समन्वयक डॉ. रजनी माथुर ने कहा कि- "यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और पर्यावरण संरक्षण का संदेश प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया।" डॉ. प्रेम कुमार ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि- "पृथ्वी की रक्षा सिर्फ सरकार या संस्थाओं का काम नहीं है। यह मेरी, आपकी, हम सबकी साझा ज़िम्मेदारी है, क्योंकि जब हम पृथ्वी को बचाते हैं, तो दरअसल हम अपना भविष्य बचाते हैं।" कार्यक्रम में डॉ. चारु दुबे एवं सुश्री मनीषा यादव ने सक्रिय सहभागिता निभाई। इसके साथ ही सभी अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों की उल्लेखनीय उपस्थिति एवं योगदान रहा, जिसने कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम का समापन पर्यावरण संरक्षण हेतु सामूहिक संकल्प के साथ हुआ। यह आयोजन विश्वविद्यालय की सामाजिक एवं पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

अत्यंत उत्साह के साथ मनाया गया विश्व पुस्तक दिवस

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा दिनांक 23 अप्रैल 2026 को 'विश्व पुस्तक दिवस' के अवसर पर सेमिनार हॉल-1, ए-ब्लॉक में अपराह्न 03:30 बजे एक गरिमामय एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में पठन-पाठन की संस्कृति को सुदृढ़ करना तथा पुस्तकों के महत्व के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना था। कार्यक्रम में विभिन्न विद्यापीठों के अधिष्ठाता, प्राध्यापकगण एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि- "पुस्तकें मानव सभ्यता की धरोहर हैं, जो ज्ञान, संस्कार और विचारों की निरंतरता को बनाए रखती हैं। डिजिटल युग में भी पुस्तकों का महत्व अक्षुण्ण है।" प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि- "पठन की आदत व्यक्ति के भीतर विश्लेषणात्मक सोच और सृजनात्मकता का विकास करती है, जो किसी भी समाज के बौद्धिक उत्थान के लिए आवश्यक है।"

प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने कहा कि- "पुस्तकें केवल जानकारी का स्रोत नहीं, बल्कि जीवन के विभिन्न आयामों को समझने का सशक्त माध्यम हैं, जो हमें संवेदनशील और जागरूक नागरिक बनाती हैं।" कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि- "विश्वविद्यालयों में पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देना समय की मांग है, जिससे विद्यार्थियों में आत्म-अध्ययन और अनुसंधान की प्रवृत्ति विकसित हो सके।" संयोजक डॉ. प्रेम कुमार ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि- "ऐसे आयोजन विद्यार्थियों को पुस्तकों के प्रति आकर्षित करने और उनके बौद्धिक विकास को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।" अधिष्ठाता डॉ. सीता राम माली ने अपने वक्तव्य में कहा कि- "विश्व पुस्तक दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि पुस्तकें हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं और इनके माध्यम से हम ज्ञान के नए आयामों को प्राप्त कर सकते हैं।" डॉ. कुलदीप शर्मा, (कृषि विद्यापीठ) ने भी अपने विचार साझा करते हुए कहा कि- "नियमित पठन से व्यक्ति का व्यक्तित्व समृद्ध होता है और वह समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम बनता है।" कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने भी उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए पुस्तक-पठन के अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम का संचालन श्री जितेन्द्र कुमार योगी (पुस्तकालयाध्यक्ष) द्वारा किया गया तथा अंत में डॉ. प्रेम कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम सुव्यवस्थित एवं सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। अंततः यह कहा जा सकता है कि यह आयोजन विद्यार्थियों में पठन-पाठन के प्रति रुचि जागृत करने एवं पुस्तक संस्कृति को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।

Educational visit to Rajasthan Netraheen Kalyan Sangh

During the educational visit to Rajasthan Netraheen Kalyan Sangh on 24 April 2026, a comprehensive understanding of the institution's functioning was gained through detailed observation of classroom teaching, therapy sessions, life skills training, and vocational activities designed specifically for visually impaired and low vision students. The classrooms were well-organized and adapted to meet the needs of the children, incorporating Braille materials, tactile resources, and assistive techniques that facilitated effective learning. The institution follows an individualized approach, ensuring that each child receives personal attention according to their abilities, learning pace, and specific needs. The teaching staff and therapists were highly supportive, professionally skilled, and dedicated, using appropriate and innovative methods to enhance students' communication, behavior, independence, and overall development.

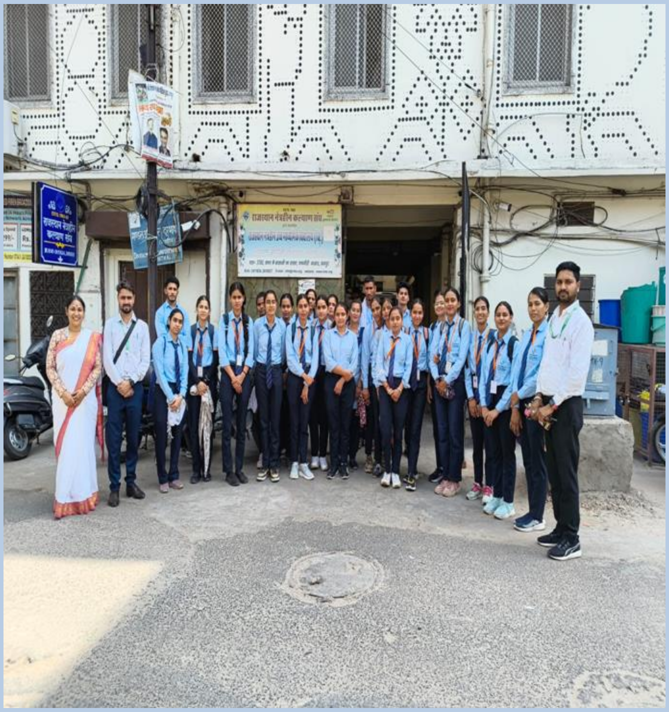

The overall structure of the school was systematic and well-maintained, with facilities aimed at promoting accessibility and functional independence. The environment of the school was friendly, safe, and inclusive, which helped students feel comfortable, confident, and motivated to participate in various activities. Co-curricular and developmental activities such as games, art, and vocational training programs were regularly conducted to strengthen social interaction, creativity, and practical life skills among the students. Overall, the institution demonstrates a highly effective and holistic approach in supporting visually impaired and low vision children to become independent, confident, and socially well-adjusted individuals, and the visit provided valuable insights into the practical aspects of special education and rehabilitation services.

Educational visit to Disha Special School

During the visit to Disha Special School on 24 April 2026, a wide range of educational and therapeutic activities were observed, which clearly reflected the school's commitment to the holistic development of children with special needs. The classroom teaching sessions were well-structured and based on an individualized education approach, where each child was taught according to their learning level, ability, and pace. Teachers used simplified teaching methods, visual aids, and repetitive instructions to ensure better understanding and retention. Special educators provided continuous support and motivation to help children actively participate in learning activities. Along with academics, therapy sessions such as speech therapy, occupational therapy, and physiotherapy were conducted regularly. These therapies played an important role in improving communication skills, physical coordination, sensory development, and behavioral control. The therapists worked patiently with each child, focusing on gradual improvement and functional independence. The life skills training program was another key component of the visit. Children were trained in essential daily activities such as personal hygiene, eating habits, dressing, and basic social behavior. This training aimed to make them more independent and capable of managing their daily routine with minimal assistance.

In addition, vocational activities were observed, where students engaged in simple skill-based tasks such as craft work and other productive activities. These sessions were designed to develop fine motor skills, concentration, and future employment potential. The overall environment of the school was found to be safe, friendly, and supportive, which helped create a positive learning atmosphere. Teachers, therapists, and support staff maintained a caring attitude, ensuring that every child felt valued, comfortable, and encouraged. Recreational activities like games, art, music, and group interaction further enhanced the children's social skills, creativity, and confidence. These activities also promoted teamwork and emotional expression.

स्टार्टअप कानूनी ढांचा एवं बौद्धिक संपदा संरक्षण विषय पर कार्यशाला का सफल आयोजन

इंस्टीट्यूशन इनोवेशन काउंसिल (IIC), यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर द्वारा दिनांक 28 अप्रैल 2026 को अन्वेषकों के लिए स्टार्टअप कानूनी ढांचा एवं बौद्धिक संपदा संरक्षण" (Startup Legal Framework & IP Protection) विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। यह कार्यशाला दोपहर 2:15 बजे विश्वविद्यालय के सेमिनार हॉल, ए-ब्लॉक में माननीया अध्यक्ष डॉ. रश्मि जैन एवं प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से संपन्न हुई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने अपने संदेश में कहा कि- "आज के युग में केवल एक अच्छा विचार होना पर्याप्त नहीं है। उस विचार को सही दिशा देना, कानूनी रूप से सुरक्षित करना और उसे दीर्घकालिक सफलता तक पहुँचाना भी उतना ही आवश्यक है।" प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि युवा उद्यमियों को केवल तकनीकी ज्ञान तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि कानूनी जागरूकता को भी अपने कौशल का अभिन्न हिस्सा बनाना चाहिए। सही जानकारी और समय पर उठाए गए कदम भविष्य में अनेक चुनौतियों से बचाते हैं। उन्होंने कहा कि उचित कानूनी दृष्टिकोण और बौद्धिक संपदा संरक्षण न केवल स्टार्टअप को सुरक्षित बनाते हैं, बल्कि उसे निवेश के लिए अधिक विश्वसनीय और आकर्षक भी बनाते हैं। मुख्य वक्ता विशेषज्ञ डॉ. राहुल शर्मा, सहायक प्रोफेसर, IIHMR विश्वविद्यालय, जयपुर ने अपने संबोधन में कहा कि- "आपका विचार, आपका उत्पाद और आपकी ब्रांड पहचान ही आपकी असली संपत्ति है। 'पेटेंट' आपके नवाचार को कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है, जबकि 'ट्रेडमार्क' आपके ब्रांड और पहचान की रक्षा करता है। 'कॉपीराइट' आपके कंटेंट और रचनात्मक कार्यों को सुरक्षित रखता है। यदि इनकी समय पर सुरक्षा न की जाए तो प्रतिस्पर्धी आसानी से आपके विचार का लाभ उठा सकते हैं।"

उन्होंने जोर देकर कहा कि आज निवेशक केवल आइडिया में नहीं, बल्कि उसकी कानूनी स्पष्टता और बौद्धिक संपदा की मजबूती में निवेश करते हैं। एक मजबूत IP पोर्टफोलियो रखने वाले स्टार्टअप की बाजार में विश्वसनीयता और मूल्य स्वतः बढ़ जाती है, साथ ही उन्होंने अनुबंध, डेटा संरक्षण कानून, रोजगार समझौते और नियामकीय अनुपालन पर भी ध्यान देने की सलाह दी, क्योंकि छोटी लापरवाही भविष्य में बड़े कानूनी विवादों का कारण बन सकती है।विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा ने कहा कि संस्थान इस प्रकार के आयोजनों के माध्यम से अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन कर रहा है। उन्होंने कहा, "नवाचार करें, लेकिन साथ ही उसकी सुरक्षा भी करें, क्योंकि बिना सुरक्षा के नवाचार लंबे समय तक टिक नहीं पाता।" परीक्षा नियंत्रक डॉ. कमल किशोर जांगिड़ ने विद्यार्थियों को जागरूकता के साथ-साथ व्यावहारिक समझ विकसित करने पर बल दिया। कार्यशाला का सफल संचालन डॉ. चारु दुबे, राष्ट्रीय नवाचार एवं स्टार्टअप नीति समन्वयक (NISP Coordinator, IIC, UOT) और डॉ. सीताराम माली (सदस्य, IIC, UOT) द्वारा किया गया। कार्यक्रम के समापन पर IIC समन्वयक डॉ. सागर कुमार ने मुख्य वक्ता, आयोजकों और सभी प्रतिभागियों का आभार

व्यक्त करते हुए कहा Innovate करें, लेकिन साथ ही Protect भी करें।” क्योंकि बिना सुरक्षा के नवाचार, लंबे समय तक टिक नहीं पाता। उन्होंने भविष्य में भी इस प्रकार की उपयोगी कार्यशालाओं के आयोजन की प्रतिबद्धता जताई और कहा कि यह कार्यशाला शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस अवसर पर चेयरपर्सन डॉ. प्रेम सुराना ने कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ उद्योग से जुड़ा व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना है, ताकि वे बदलते समय की आवश्यकताओं के अनुरूप अपने कौशल का विकास कर बेहतर रोजगार प्राप्त कर सकें। प्रो चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाएं विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाती हैं और उन्हें उनके करियर की सही दिशा दिखाती हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह पहल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

हम साथ हैं, तो संभव है

चार बार टली निरीक्षण की घड़ी, फिर भी टीम हिम्मत न हारी,
खड़ी रही रश्मि, अंकित और अनूप की सेना सारी,
मेहनत, लगन और विश्वास से, टीम ने राह सँवारी।
अंशु सर की प्रेरणा से, शुरुआत ने रूप लिया,
गांधी सर के साथ ने हर कदम पर संबल दिया।

धूप में भटके वंदना–राघवेंद्र, एमओयू के लिए जुटे रहे हर पल,
गांधी सर संग भावना–कृष्णा ने प्रपोजल में दिया अथक अपना बल।
फिर दिल्ली जाकर राघवेंद्र, कृष्णा ने जमा किया दस्तावेजों का
बंडल।धीरज ने दस्तावेज़ों को चार चार बार अपडेट किया,
और अंतिम समय में निरीक्षण टलने पर मन थोड़ा हताश हो आया।

धीरज के साथ सीमा ने, कंधे से कंधा मिलाया,
हर दस्तावेज़ को सहेज-संवार कर, व्यवस्थित रूप दिलाया।
धीरज, सीमा संग खड़ी रही गीता बनाकर मजबूत डॉक्यूमेंट की दीवार,
हर मुश्किल में साथ निभाया, बढ़ाया सबका हौसला अपार।
बीएससी क्लिनिकल साइकोलॉजी की असेसमेंट रिपोर्टों में उलझकर
भावना हुई व्याकुल, पर कोर्स की उपलब्धि ने सारी थकान हर ली, मन
हो उठा आनंदमय और प्रफुल्ल।
हसन ने विवेकानंद हॉस्पिटल में समर्पण का परिचय दिया,
डॉ. तांबी सर के सहयोग से पेशेंट लिस्ट संजोया।
हसन सर के संग लतीफ–पवन, प्रतीक्षा में दिन बिताते,
कब आए वो पल निरीक्षण का, मन ही मन दोहराते।

माया मैम के मार्गदर्शन से, हर कमी को सुधारा,
सोनिया–जितेंद्र ने लाइब्रेरी में, ज्ञान का दीप संवारा।

वंदना जब भी नितिन सर को, बेसमय में कॉल लगाती,
चाहे रात के दस या ग्यारह, हर बार नितिन की तुरंत मदद
मिल जाती।
राघव, मनीष और यश सर की, दौड़-भाग रंग लाती,
मनीष की हंसी ठिठोली से निरीक्षण का टेंशन भगाती
और हर छोटी-बड़ी तैयारी में, टीम की मेहनत झलक जाती।

रजिस्ट्रार सर ने गूगल ड्राइव से, दस्तावेज़ों को संजोया,
निरीक्षण के टेंशन भरे माहौल में भी हंसी-मज़ाक कर,
सबका मन हल्का कर मनोबल बढ़ाया।
मीराबाई जी ने समय-समय पर, सबका ध्यान रखा,
चाय–नाश्ते से हर थके मन को, फिर से उत्साह से भरा।

रश्मि मैम और गांधी सर के आपसी समन्वय ने राह दिखाई,
सभी फैकल्टी का मार्गदर्शन कर, सफलता की ज्योति जगाई।
मिल-जुलकर जब सबने एक टीम बनकर कदम बढ़ाया,
तभी आरसीआई से यह कोर्स हमने, अथक प्रयासों से पाया।

डॉ. वंदना सिंह ठाकुर
अधिष्ठाता, विशेष शिक्षा विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

Organised a Health Awareness & Patient Counseling Session

Dated April 29, 2026, to bridge the gap between academic knowledge and real-world healthcare practices. The session was conducted by expert doctors from Jeevan Rekha Super Specialty Hospital, Jagatpura. The program began at 1:30 PM in the Seminar Hall, Block-A, and was attended by honourable President Dr. Rashmi jain, Registrar Dr. Anoop Sharma, Research dean Dr. Rohit Sarswat, all departmental dean, HODs principal, students, staff, and faculty members of the university. The objective was to enhance awareness on health, disease prevention, and patient counseling while promoting inter-professional collaboration. Dr. Shubhranshu, MBBS, MD (Pulmonary Medicine), IDCC, FUAPM, Consultant Pulmonologist, addressed the gathering on the topic "Healthy Lungs, Healthy Life" from 1:30 PM to 2:00 PM. He explained common respiratory diseases like asthma and COPD, and emphasized the role of pharmacists in patient counseling for better medication adherence.

The second session was conducted by Dr. Aditi Agarwal, MBBS, MD (Psychiatry), Psychiatrist & De-Addiction Specialist, on "Stress Management and Internet Addiction" from 2:00 PM to 2:30 PM. She highlighted the rising cases of stress and digital dependency among youth and shared practical counseling techniques and preventive strategies. The session concluded with an interactive Q&A round where students cleared their doubts directly with the experts. HOD, Department of Pharmacy, thanked the guest speakers and Jeevan Rekha Hospital for their valuable time and insights. The event successfully sensitized future pharmacists about their role in patient care beyond dispensing medicines and strengthened the importance of empathetic communication in healthcare.

स्किल ट्रेनिंग से रोजगार की राह आसान, विद्यार्थियों को मिले जॉब ऑफर लेटर

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के बीसीए विभाग के विद्यार्थियों ने कौशल आधारित प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण कर विभिन्न कंपनियों से ‘जॉब ऑफर लेटर’ प्राप्त कर विश्वविद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। यह विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम एमसीसी (MCC) अंडर CII फाउंडेशन द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें कुल 24 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम पिछले माह विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित किया गया था। 15 दिनों तक प्रतिदिन 3 घंटे चलने वाले इस प्रशिक्षण सत्र में विद्यार्थियों को एडवांस एक्सेल, कम्युनिकेशन स्किल, इंटरव्यू तकनीक, पर्सनालिटी डेवलपमेंट एवं कॉर्पोरेट व्यवहार से संबंधित महत्वपूर्ण प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण का संचालन मास्टर ट्रेनर गौरव उपाध्याय द्वारा किया गया, जिन्होंने विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुख कौशल विकसित करने हेतु व्यावहारिक एवं प्रेरणादायक मार्गदर्शन दिया। प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों को विभिन्न कंपनियों से जॉब ऑफर लेटर प्राप्त हुए, जिससे विद्यार्थियों में उत्साह और आत्मविश्वास का माहौल देखने को मिला।

कार्यक्रम का सफल समन्वयन बीसीए विभागाध्यक्ष निलेश शर्मा द्वारा किया गया। उन्होंने बताया कि इस प्रकार के इंडस्ट्री ओरिएंटेड प्रशिक्षण विद्यार्थियों के तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ उनकी रोजगार क्षमता को भी मजबूत बनाते हैं। विश्वविद्यालय के प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने चयनित विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में स्किल आधारित शिक्षा और इंडस्ट्री ट्रेनिंग विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला है। विश्वविद्यालय प्रशासन एवं शिक्षकों ने विद्यार्थियों की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। यह उपलब्धि अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी।

हाँ, मैंने तोड़े हैं बंधन, रूढ़िवादी परम्पराएँ

हाँ, मैंने बंधन तोड़े हैं... उन रूढ़िवादी परम्पराओं के बंधन, जो इंसान की संवेदनाओं से बड़ी मानी जाती हैं। मेरी बड़ी बहन 57 वर्ष की आयु में विधवा हो गई थीं। उनकी कोई संतान नहीं थी। पति के असमय चले जाने के बाद उनका जीवन जैसे ठहर सा गया। जिन लोगों के बीच उन्होंने वर्षों तक अपना जीवन समर्पित किया, वही लोग उनकी भावनाओं से अधिक उनकी बचत और संपत्ति में रुचि लेने लगे। उन पर दबाव बनाया जाने लगा कि वे परिवार के ही किसी रिश्तेदार के बच्चे को गोद लें। यह निर्णय उनकी इच्छा का नहीं, बल्कि दूसरों के स्वार्थ का परिणाम होता। धीरे-धीरे वे गहरे अवसाद में जाने लगीं। उनके चेहरे की मुस्कान गायब हो गई थी, आँखों की चमक बुझ गई थी। समाज की सोच भी कम आहत करने वाली नहीं थी। लोग कहते- "इस उम्र में शादी? अब इसकी क्या आवश्यकता?" कुछ लोग विवाह को केवल शारीरिक संबंधों तक सीमित कर देते। मुझे यह सोच अत्यंत संकीर्ण और अमानवीय लगी। क्या विवाह केवल शरीर का बंधन है? क्या मन का अकेलापन, आत्मा की पीड़ा और भावनात्मक सहारे की आवश्यकता उम्र देखकर समाप्त हो जाती है? मैं और मेरे पति ने निश्चय किया कि हम उन्हें अकेलेपन की सजा नहीं भुगतने देंगे। सबसे पहले हमने उन्हें मानसिक रूप से तैयार किया। उनके डर, संकोच और समाज की चिंता को धैर्यपूर्वक सुना। धीरे-धीरे उनके मन में जीवन के प्रति विश्वास जगाया। फिर उनके लिए एक समझदार, संवेदनशील और परिपक्व जीवनसाथी की खोज की। जब विवाह का निर्णय लिया गया, तो विरोध के स्वर भी उठे। मेरी माँ और पिताजी भी इस निर्णय के पक्ष में नहीं थे और वे विवाह में सम्मिलित नहीं हुए। वह क्षण मेरे लिए अत्यंत भावुक था, पर मैंने ठान लिया था कि इस बार समाज की परम्पराओं से अधिक अपनी बहन की खुशी को महत्व दूँगी। मैंने और मेरे पति ने उनका कन्यादान किया। वह पल मेरे जीवन का सबसे गर्वपूर्ण और भावनात्मक क्षण था। आज मेरी बहन प्रसन्न हैं। उनके चेहरे पर संतोष है, जीवन में उद्देश्य है और मन में शांति है। मैं समाज को यह संदेश देना चाहती हूँ कि हर उम्र में इंसान को भावनात्मक सहारे की आवश्यकता होती है। बड़ी उम्र में विवाह कोई अपराध नहीं, बल्कि जीवन को पुनः जीने का साहस है। यदि मैंने रूढ़ियों के बंधन तोड़े हैं, तो मुझे इस पर गर्व है।

डॉ. रजनी माथुर
अधिष्ठाता, बेसिक एंड एप्लाइड साइंस विद्यापीठ
आईक्यूएसी समन्वयक(अतिरिक्त प्रभार)

आट्टा सट्टा प्रथा

(हमने हमारे समाज की एक प्रथा को देखा है, जिसे कहते तो जीवन हैं, परंतु असल में वह मृत्यु है।)

आट्टा सट्टा प्रथा
बेटी के बदले बहू का संग,
समाज ने रचा था ये अजीब सा ढंग।
शुरुआत हुई थी नेक इरादों से,
पर आज ये बोझ है युवाओं के सपनों पे॥

रिश्ते बने सौदे की तरह,
मानवता खो गई इस कहर।
कुछ शादियाँ चलती हैं, पर टूटती अधिक,
हर टूटन से जुड़ता नया दुख॥
एक घर में बिखराव हुआ अगर,
दूसरे घर में भी टूटा वही सफर।
फिर नई शादी, नया घर, नया खेल,

हर तरफ़ यही चलता है मेल॥
युवाओं के मन में डर समाया,
शादी का नाम ही बोझ बन पाया।
जिम्मेदारी से कतराते हैं सब,
क्योंकि आट्टा सट्टा ने छीन लिया है॥

सुश्री मनीषा यादव
सहायक आचार्य, रसायन विज्ञान विभाग